रात्री क्लास ओमशान्ति 6-11-67

कचहरी करना अच्छा हैं। बतावे वा न बतावें फिर भी कचहरी अच्छी हैं। सच्च तो कोई मुश्किल ही बतावेंगे। तुम ही स्टुडेन्ट्स। तुमको एक भी दिन मुरली मिस न करनी चाहिए। कहां भी हो मुरली मिस न करनी चाहिए। नहीं तो एक दिन अबसेन्ट पड़ जावेगा। मुरली कोई समय अच्छी चलती हैं तो पाइन्ट्स सुननी चाहिए। इस पर ध्यान देना पड़ता हैं। पाईन्ट्स बच्चे भूल भी जाते हैं। अभ्यास न करने कारण इतना उन्नति को नहीं पाते हैं। नहीं तो बाप युक्तियां बहुत बताते हैं। बाप को याद करना हैं। तीन चांस मिल हैं। बाप वा टीचर या गुरु तीनों से एक भी याद करे तो भी अहोसौभाग्य। मारा ऐसी हैं जो तीनों से एक भी याद नहीं पड़ता। हैं एक ही परन्तु भिन्न2 पढ़ाई, भिन्न श्रीमत मिलती हैं ना। एक भी याद आवे तो उसका फायदा मिलता हैं। याद की यात्रा हो गई। बहुत कल्याण हो। हो सकता हैं पदम पति बन जावे। बच्चे समझते हैं 21 जन्मों का वर्सा हैं। पैसे की तो बात ही नहीं। वहां होंगी सब सोने की चीजें। इस हिसाब से पदम पति तो बनते हो। यहां बैठे बैठे अपने स्वर्ग को जरूर याद करते होंगे। पढ़ाई याद रहे, टीचर याद रहे तो भी खुशी का पारा चढ़ता रहे। इतना जरूर हैं ज्ञान जो लेते हैं उनकी तीर्थों आद तरफ बुधि नहीं जाती होंगी। बाप के तरफ ही बुधि जाती होंगी। मंदिर में देखने से भी बुधि का योग शिव बाबा के तरफ चला जावेंगा। अच्छा ओमशान्ति। बच्चों को गुड नाईट।

रात्री क्लासः-12-11-67:- निष्ठा में बैठो ऐसे कह कर क्लास बिठाना नहीं चाहिए। बाबा ने तो कहा कि कम कार डे दिल यार डे। आत्मा को बाप को याद करना हैं। तुम जबरदस्ती बैठते हो तो माया भी जबरदस्ती आती हैं। तुमको बिठाने का बहुत शौक हैं। वास्तव में आंखें भी बन्द होनी न चाहिए। बाबा समझता हैं अंधा हैं। माशुक को आंखें बन्द कर कैसे देखेंगे। तुम आशुक हो ना। सन्यासी लोग आंखें बन्द कर बैठते हैं। तुमको बाबा ने समझाया हैं कि आंखें बन्द कर न बैठना हैं। कोई को टेव होती हैं वा उनको देखने न चाहते हो तो आंखें बन्द कर बैठे। शिव बाबा से प्यार से होगा तो इनको (ब्रहमा को) देखेंगे नहीं। परन्तु शिव बाबा तो इन द्वारा ही सब को देखते हैं ना। यह कहते हैं मैं देखते हुये नहीं देखता हूं। जानता हूं यह सब विनाश होना हैं। फिर भी आंखें बन्द कर बैठना कायदे के विरुध हैं। टीचर को भी झूटका आ जाती हैं। न पढ़ने वाले को न पढ़ाने वाले को आंखें बन्द कर बैठना चाहिए। लिखत में भी प्रेक्टीस ऐसी होनी चाहिए जो लिखते हुये भी माशुक को देखते रहे। यह तो मोस्ट बिलवेड बाप हैं। उनके आगे माशुक के आगे आंखें बन्द कर बैठे यह तो इनसल्ट हैं। शिव बाबा को तो कब नींद आवेंगे नहीं। स्टुडेन्ट कब टीचर के आगे झूटके नहीं खावेंगे। वैसे क्लास में यह कायदा नहीं हैं। बच्चों को पढ़ना हैं ना। यहां भी तुम बच्चों को अटेन्शन खैंचवाना चाहिए। तो बाप तरफ बुधि जावें। घड़ी2 कहते रहते हैं कि आत्माभिमानी होकर बैठो। अल्ला के बच्चे होकर बैठो। उल्लु के बच्चे होकर न बैठो। बेहद का बाप तो समझाये सकते हैं ना। बच्चों को कहेंगे अटेन्शन। अपन को आत्मा समझो। यह है मुल बात। तुम आद को भी जानते हो अन्त को भी जानते हो। अटेन्शन कहने से ही तुम्हारीबुधि उपर चली जानी चाहिए। यह प्रेक्टीसकरना बहुत अच्छा हैं। विलायत में जावे तो भी वह अवस्था रहे। बाहर में रहने वाले में भी नम्बरवार हैं। तीन चार हैं जो पक्के पवित्र रहते हैं विलायत में भी। बच्चों को अब यही बुधि में हैं कि वापस जाना हैं। पतित वापस जाये न सके। कयामत का समय हैं हिसाब किताब चुक्त कर ही जाना हैं। अब तुम बच्चों को सैलीवसी जरूर चाहिए। सभी को अनुभव होता होगा कि आंखें कैसे धोखा देती हैं। इन पर बड़ी सम्भाल करनी हैं। मैं आत्मा हूं बाप को याद करना हैं। यह टेव होगी तो कहां भी आंखें जावेंगी नहीं। पास सभी तो नहीं होते। बड़ी जबरदस्त बादशाही स्थापन हो रही हैं। अच्छा मीठे2 बच्चो को गुड नाईट। अच्छा बच्चों को नमस्ते। अच्छा जी ओमशान्ति अर्थात अहम आत्मा शान्ति स्वरूप बाप को याद करती हैं। अच्छा अब बिदाई। ओम।